संदेश ३५९

पेरिस, १९ फरवरी २०१९

जय श्री कृष्ण

हम लोग विशेषज्ञों की निम्नलिखित रिपोर्टों पर विचार करें । ये विशेषज्ञ न केवल “बुद्धिजीवी” हैं, अपितु जीवन के प्रति प्रेम एवं प्रत्यक्षबोध की गहन ऊर्जा से उत्पन्न “अंतर्दृष्टि” को भी उपलब्ध हैं।

“मोटापा, कुपोषण और जलवायु परिवर्तन की समस्या भविष्य में और भी भयावह होने वाली है।”
“जंक फ़ूड का सेवन दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। फीजी (गैस के बुलबुलों से भरपूर) पेय बनाने वाली एक विशाल कंपनी केवल भारत एवं चीन में इसके सेवन को बढ़ाने के लिए 10 अरब डॉलर से अधिक की राशि निवेश करना चाहती है।”

विभेदकारी चित्त (“मैं”) एवं विभेदकारी चित्तवृत्ति (मन) द्वारा उत्पन्न समाज की समस्याओं का साहसपूर्वक सामना संभव है क्या? ये भगवत्ता की सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता एवं सर्वशक्तिमत्ता के चिदाकाश में विलय हेतु ऊपर उठने वाली जागरण की लौ को रोकते हैं। समस्याओं के साहसपूर्ण निष्पक्ष दर्शन की अवस्था में ही “मैं” या मन व्यावहारिक कार्यों के दक्षतापूर्ण संपादन में संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करता है।

जागरण की अग्नि अनुबंधनों को जला डालती है, कार्य एवं कारण के बंधन को तोड़ डालती है और द्विव्य - विस्फोटक से मानसिक कारागार को ध्वस्त कर देती है। और तब धर्म, राष्ट्रीयता, प्रजाति या भाषा या किसी अन्य की आड़ में किए जाने वाले समस्त विभाजन पूर्ण रूपेण समाप्त हो जाते हैं। इस अवस्था में हममें से प्रत्येक शेष मानवता से अभिन्न होता है। और फिर हम लोगों का दैनिक जीवन स्वतः ही गहरी ध्यानशील गुणवत्ता को उपलब्ध हो जाता है। जागरण के इस प्रकाश में ही मनुष्य के सत्य (कृष्ण का दिव्य गीत अर्थात् भगवद्गीता जो कालातीत एवं सर्वव्यापक है) की खोज के लिए एक नई अंतर्दृष्टि का उदय हो सकता है। हमारे चारों ओर जो कुछ घटित हो रहा है, उसके प्रति जागरण में होना ही वास्तविक प्रार्थना है। यह प्रार्थना “मैं”, “मैं”, “मैं” और “तुम”, “तुम”, “तुम” की स्वार्थ, प्रतिशोध एवं समस्त अर्जित मूढ़ताओं के जाल को नष्ट कर देती है।

जय यदुनंदन; कृष्ण; जनार्दन; केशव; पूर्ण-अवतार!